वैकल्पिक विद्यालय में शिक्षा
एक अनुभव

ऋषभ कुमार मिश्र*
समरजीत यादव**

विद्यालय और महाविद्यालय ज्ञान के सरोकारों से जुड़े संस्थानिक ढाँचे हैं। ज्ञान क्या है? इसे कैसे प्रदान किया जाए? कैसे प्रमाणित किया जाए? कैसे प्रशिक्षित किया जाए और कैसे परिष्कृत किया जाए? जैसे सवालों पर इन संस्थानिक निकायों ने अपना एकाधिकार बना लिया है। साक्षरता के कौशल के माध्यम से इस एकाधिकार को वे प्रचारित, प्रसारित एवं संरक्षित करते हैं। इस तरह से वे एक परिधि विकसित करते हैं जिसके भीतर की दुनिया ज्ञान के लिए प्रवेश, पढ़ाई, परीक्षा और प्रमाणन के लिए जानी जाती है। इस दुनिया के दबाव को अलग-अलग रूपों में अनुभव किया गया है और इससे मुक्ति के लिए नीति और अभ्यास के स्तर पर गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। इस लेख में लेखक द्वारा एक वैकल्पिक विद्यालय (आरोही लाइफ़ एजुकेशन) के अवलोकन से प्राप्त अनुभव के आधार पर औपचारिक शिक्षा की परिधि के बाहर व्यावहारिक अनुभवपरक शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों को बताया गया है।

आरोही लाइफ़ एजुकेशन केलामंगलम (होशुर, तमिलनाडु) के पास एक गाँव में स्थित है। छोटी पहाड़ियों से घिरा, अल्प आबादी वाला गाँव उबड़-खाबड़ भूमि और खेतों के साथ निकटवर्ती जंगल के हाथियों की सैरगाह के लिए भी जाना जाता है। यहाँ आरोही विद्यालय की स्थापना कोई योजना का हिस्सा न होकर, विकल्पों के अभाव में मिली भूमि की परिणति है। लगभग 30 एकड़ में फैले इस स्कूल के सभी भागीदार इसे विद्यालय न कहकर सीखने की भूमि (लैंड ऑफ़ लर्निंग) कहना पसंद करते हैं। वस्तुतः वे विद्यालय से संबंधित नकारात्मकता, जैसे— समय का बंधन, पाठ्यपुस्तक की प्रधानता, परीक्षा के दबाव का सांकेतिक प्रतिकार आदि करना चाहते थे। उनका मानना था कि रोज़मर्रा के क्रियाकलाप में जिज्ञासा पैदा करना, इसमें खोजी प्रवृत्ति के माध्यम से गणित, भाषा और विज्ञान को सिखाना ही वास्तविक शिक्षा है। इस तरह की शिक्षा पाठ्यचर्या से नहीं, बल्कि निरीक्षण-मनन-सृजन द्वारा संचालित होती है। इस दर्शन ने सीखने के तरीके में खुलापन और विस्तार किया है।

**सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र 442001
***सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

© NCERT not to be republished

इस वैकल्पिक विद्यालय के संस्थापकों ने विद्यालय स्थापना की अभिप्रेरणा को औपचारिक शिक्षा और नगरीय जीवन से ऊबन और खीझ का परिणाम बताया। संस्थापक दंपती ने सूचना प्रौद्योगिकी और वाणिज्य में उच्च शिक्षा की उपाधि प्राप्त की थी। ये दोनों सफल व्यावसायिक जीवन जी रहे थे, लेकिन इन्होंने रोज़मर्रा के जीवन में एक बोझ का अनुभव किया कि वे जो करना चाह रहे थे और जो कर रहे हैं, उसमें सामंजस्य नहीं था। इनके अनुसार जीविका और सामाजिक प्रतिष्ठा उनके 'आत्म' और 'नैसर्गिक चेष्टाओं' पर हावी हो रही थी। यही बात उन्होंने अपनी बेटी की औपाचारिक शिक्षा के संदर्भ में भी महसूस की।

इनसे बाताचीत के दौरान इन्होंने साझा किया कि 'हमें लगा कि हमारी बेटी जिस रास्ते पर बढ़ रही है, उस पर चलकर वह सफल प्रोफ़ेशनल बन सकती है, लेकिन इसकी कीमत वह खुद को खोकर चुकाएगी यह नहीं पता था। इस उहापोह में वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था की खोज करने लगे जो व्यक्ति को 'आत्म' का साक्षात्कार कराए। जो शिक्षा किताबों, कक्षा और अध्यापकों के साथ लिखने, पढ़ने, बोलने और सुनने से हटकर 'करने' के रूप में प्रकट हो। वस्तुतः 'करने' के भाव को केंद्र में रखना इस संस्था को विशिष्ट बनाता है। 'करने' के लिए एक कर्ता का होना आवश्यक है। बच्चा जब कर्ता बनता है तो वह कार्य को अपनाता है। इस तरह से सीखने में स्वायत्तता का जन्म होता है। यह स्वायत्तता अधिगम को बोझिल होने से बचाती है, लेकिन कई प्रयोजनमूलक समस्याओं को पैदा करती है— अब कर्ता किस कार्य को करेगा? कैसे करेगा? और क्या उसका सीखना ज्ञान के समाजशास्त्रीय खाँचे में फ़िट बैठता है? इस तरह की प्रक्रिया से गुज़रने वाले विद्यार्थी विद्यालयी जीवन के बाद क्या करेंगे? हालाँकि, इन सवालों से विद्यालय के कर्ता-धर्ता भी जूझ रहे हैं। फिर भी उनकी दिनचर्या को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने एक वैकल्पिक व्यवस्था द्वारा जीवन को नया अर्थ प्रदान किया है।

विद्यालय के सभी सदस्य हर दिन की शुरुआत किसी सवाल से करते हैं। ये सवाल विद्यार्थियों के सामाजिक, प्राकृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अनुभव से उपजते हैं, जैसे— जिस मिट्टी के बरतन में चाय पी रहे हैं वह कैसे बनता है? दूध कैसे बनता है? हाथी सर्दियों के मौसम में जंगल से बाहर क्यों आते हैं? खेलने के लिए झूला कैसे बनाना है? आदि। सवाल की प्रकृति के अनुसार वे तय करते हैं कि जवाब की खोज अकेले करेंगे या समूह में। इस तरह से वयस्क और हमउम्र साथियों के साथ चर्चा करके प्रत्येक दिन एकल और लघु समूह बनते हैं। दिन के पहले पहर में वे इन सवालों का सिद्धांतों और प्रयोग के आधार पर उत्तर खोजते हैं। उदाहरण के लिए, जब हमने विद्यालय का भ्रमण किया उस समय एक विद्यार्थी मिट्टी के बर्तन को पकाने के लिए भट्टी का निर्माण कर रहा था। एक अन्य समूह सौर ऊर्जा से बल्ब जलाने की प्रक्रिया को समझने का कार्य कर रहा था। इन दोनों कार्यों में वे विज्ञान के सिद्धांतों की समझ को प्रयोग और अनुभव द्वारा निर्मित कर रहे थे। वयस्क साथी उन्हें सहायता प्रदान कर रहे थे। उनका ध्यान कार्य निष्पादन की त्रुटियों की ओर

© NCERT not to be republished

आकर्षित कर रहे थे। उन्हें सुझाव दे रहे थे। इन वयस्क साथियों ने सुगमकर्ता की भूमिका अपना रखी थी। इन्हें समस्या का हल बताने में दिलचस्पी नहीं थी, बल्कि समस्या की जटिलता को सीखने का माध्यम बनाया जा रहा था। इस बीच रसोई से इनके लिए जलपान मुहैया कराया जाता है। वे अपनी सुविधा और गति से लगभग 3 से 4 घंटे कार्य करते हैं। इनका उद्देश्य किसी अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करना नहीं होता, बल्कि वे जो प्रश्न लेकर चले थे उसके उत्तर की राह को तलाशते रहते हैं। इस दौरान वे विराम लेकर झूला भी झूल सकते हैं, पेंटिंग या कोई और कार्य कर सकते हैं। यह विश्राम सीखने में एकरसता को भंग करता है। विद्यालय के संचालक ने बताया कि उनका अवलोकन रहा है कि विश्राम के क्षणों में कई बार बच्चों को सूझ आई है और उन्होंने समस्या का हल खोजा है। इसी तरह विद्यालय के संचालक का मानना है कि प्रकृति के स्पंदन को महसूस करना भी एक क्षमता है जिसे संवर्धित किया जाना चाहिए। वे मानते हैं कि स्वतंत्र बैठकर प्रकृति और जंगल को भी निहारना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। इसे वे लिखना, याद करना जैसी परंपरागत गतिविधियों से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

दोपहर को भोजन करने के लिए पूरा विद्यालय एकत्रित होता है। दोपहर का भोजन बड़े बच्चे, बावर्ची और रसोईघर सहायक की निगरानी में तैयार करते हैं। वे खाने से पहले, खाने के दौरान और बाद में कुछ आवश्यक सवालों पर चर्चा करते हैं, जैसे— भोजन में कौन से पोषक तत्व हैं? उसका उत्पादन कैसे होता है? कीमते क्या हैं? क्या भोजन में सारे पोषक तत्व सम्मिलित हैं? इसके अलावा जो दायित्व उन्होंने सुबह चुना था, उसके बारे में भी चर्चा होती है। ध्यान देने वाली बात यह रही कि इस चर्चा में वे सफलता और असफलता की बात नहीं करते, बल्कि क्या कर रहे हैं और क्या अनुमान है जैसे सवाल होते हैं। शोध में पाया गया कि विद्यार्थी और शिक्षक एक-दूसरे की बात सुन रहे थे और अधिकांश ने एक-दूसरे को सलाह दी तथा साझा किए गए अनुभवों के आधार पर अपने लिए निहितार्थ निकाले। इस अंतर्क्रिया व भोजन के अंत में विद्यार्थी एवं शिक्षक द्वारा अपने-अपने बरतन स्वयं धोए जाते हैं।

इसके बाद विश्राम का समय शुरू होता है। दो घंटे के बाद अर्थात् दिन के तीसरे पहर में परिसर की देख-रेख का कार्य आरंभ होता है। इस दौरान भवन, शौचालय, बगीचा और खेल का मैदान साफ़ करने या अन्य आवश्यक देख-रेख का दायित्व समूह में सौंपा जाता है। उस दौरान (लेखक को) एक पाँच वर्ष की लड़की के साथ शौचालय साफ़ करने का दायित्व मिला। इस लड़की के अभिभावक सॉफ़्टवेयर इंजीनियर हैं। वह कन्नड़ भाषी परिवार से आती है। वह हम लोगों से अंग्रेज़ी में संवाद कर रही थी। शौचालय को साफ़ करने की उसकी तत्परता लेखक के साथ उपस्थित साथी को भी गांधीजी की याद दिला रही थी। गांधी से अपरिचित यह बालिका अपने विद्यालय के परिचारक को इस गूढ़ ज्ञान का प्रणेता मान रही थी। उसके साथ कार्य करने का अनुभव चमत्कृत करने वाला था। उसने लेखक और उसके साथी को तन्मयता से 2×3 के शौचालय के कोने-कोने से परिचित कराया। एक विशेषज्ञ की

© NCERT not to be republished

तरह बताया कि किस कोने में कैसे और कितना रीठा (शौचालय साफ़ करने के लिए प्रयुक्त प्राकृतिक सामग्री) फैलानी है? ब्रश कैसे घुमाना है? पानी का सदुपयोग कैसे करना है? इन सारे पक्षों को विस्तार से समझाने के दौरान उसका कर्ता-भाव देखने लायक था। उसने विशेष निर्देश दिया कि कोई कोना ना छूटे और ना ही कोई धब्बा दिखे। एक निपुण प्रशिक्षक की तरह एक शौचालय साफ़ करके दिखाया और शेष दो शौचालयों को उसकी निगरानी में लेखक और उसके एक साथी ने साफ़ किया।

इस दौरान एक खास व्यवस्था देखने को मिली। शौचालय की बाहरी दीवार जो खुले मैदान की ओर थी, उधर 'सुसु पार्क' (टॉयलेट) बना हुआ था। इससे निकलने वाले पानी से पौधों को सींचा जाता था। इस पार्क की दीवार पर अंकित था कि मूत्र विसर्जन के बाद 'एक बकेट पानी' डाला जाए। यह भी लिखा था कि कोई व्यक्ति एलोपैथिक दवाएँ ले रहा हो तो वह इसका प्रयोग न करे। इस तरह की व्यवस्था और निर्देश प्रबंधन में नौकर नामक व्यवस्था के बदले खुद से कार्य करने के मूल्य को पोषित करते हैं और हर तरह के श्रम को प्रतिष्ठित मानते हैं। कुल मिलाकर इस कार्य में अद्भुत अनुशासन और सौंदर्य का मिलन था जिसके मूल में एक छोटी बच्ची के कार्य निष्पादन की ऊर्जा निहित थी।

दोपहर के भोजन से पहले एक विद्यार्थी सलाद काटने में मग्न था। उसके लिए यह कोई रोज़ाना का अभ्यास या यांत्रिक कार्य नहीं था। वह गणितीय आकृतियों में फल और सब्ज़ियों को काटने का आनंद ले रहा था। अपने साथ बैठे दूसरे विद्यार्थी को वह इन आकृतियों की बारीकियों से परिचित करा रहा था। मज़ेदार बात यह थी कि दूसरा विद्यार्थी किस फल में कौन-सा पोषक तत्व मिलता है और कितनी मात्रा में उसे लेना चाहिए जैसे सवालों का हिसाब लगा रहा था। इस तरह से ये विद्यार्थी भी ज्ञान की परिधि के बाहर एक ऐसा परिवेश बना रहे थे जहाँ सीखने का उद्देश्य जीवन और प्रकृति को समझना था न कि विषय की भाषा शैली को संज्ञान में दर्ज करना। इनके लिए सृजनात्मकता स्वाभाविक और व्यक्तिनिष्ठ ढंग से साकार हो रही थी और वह इनके अधिगम को क्रमशः नया आयाम दे रही थी।

परिसर की सफ़ाई करने के बाद विद्यालय परिसर के सभी सदस्य एक साथ खेलते हैं। खेल क्या होगा? उसके नियम क्या हैं? कैसे खेलना है? की योजना विद्यार्थी खुद बनाते हैं। कुछ अवसरों पर संचालक सदस्य किसी नए खेल को बच्चों के साथ क्रियान्वित करते हैं। संचालकों ने बताया कि इस गतिविधि में सामुदायिकता, परस्पर सहयोग और आत्मानुशासन के मूल्य पोषित किए जाते हैं। खेल के उपरांत जलपान होता है और शाम को सभी विद्यार्थी समूह में सामाजिक यथार्थ के किसी पहलू पर चर्चा करते हैं। वे देश-दुनिया की खबरों पर बहस करते हैं। कई बार वे स्थानीय आयोजनों, उत्सवों और व्यवस्था को जानने के लिए समुदाय में जाते हैं। सप्ताहांत पर कुछ विद्यार्थी घर जाते हैं। जो बच्चे परिसर में रहते हैं, वे आस-पास के गाँव, कस्बे या पर्यटन स्थलों पर भ्रमण के लिए जाते हैं। प्रतिदिन सोने से पहले दिनभर के कार्यों पर मनन करना इनका दैनिक अभ्यास है। कई बार वे इसे लिखते हैं। यही दस्तावेज़ इनका प्रमाणपत्र और अंकपत्र होता है। इसमें ये विशेष रूप से उल्लिखित करते हैं कि इन्होंने क्या सीखा और

© NCERT not to be republished

कैसे सीखा? भावी योजना क्या है? यह दस्तावेज़ उनके विचारों का संग्रह होता है जिसे वे सीखने का स्रोत बनाते हैं।

इस तरह से एक गाँव में स्थित आरोही संस्था विद्यार्थियों में खुद से दुनिया को जानने और समझने की क्षमता विकसित कर रही है। यहाँ के बच्चे और वयस्क किसी भी सवाल को विषय का सवाल मानकर गणित, विज्ञान और भाषा आदि के झंझट में नहीं फँसते, बल्कि उसे जीवन का सवाल मानकर जीने के लिए सीखते हैं।

© NCERT not to be republished